Bundelkhand Journal of Academic Research

भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित पर्यावरण संरक्षण की अवधारणाएं

डॉ. रीतेश कुमार खरे

असिस्टेंट प्रोफेसर (जन्तु विज्ञान), जन्तु विज्ञान विभाग, रघुवीर सिंह राजकीय महाविद्यालय ललितपुर, उत्तर प्रदेश।

(**Corresponding Author:** rkkbwr@gmail.com)

https://doi.org/10.5281/zenodo.23016701

सारांश

पर्यावरण शब्द परि (चारों ओर का) तथा आवरण (ढका हुआ) शब्द से मिलकर बना है। पर्यावरण शब्द में प्रकृति के विभिन्न घटको जैसे वायु, जल, मृदा एवं जीवधारियों आदि को सम्मिलित किया गया है भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान और विज्ञान का अद्भुत समन्वय है। इसमें मानव के सतत विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण को अति आवश्यक माना गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक काल से ही मानव को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया है। ऋग्वेद काल से ही भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन के भौतिक, आध्यात्मिक, नैतिक और बौद्धिक मूल्यों पर केंद्रित रही है। प्राचीन साहित्य में सदा ही सत्य, अनुशासन, विनम्रता, आत्मनिर्भरता और सभी के सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर दिया गया है। वेदों में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन की श्रेष्ठता है। प्रस्तुत लेख में पर्यावरण और प्रकृति संरक्षण के लिए परंपरागत रूप से चली आ रही भारतीय ज्ञान परंपरा की विवेचना की गई है।

आलेख सूचना			
प्राप्त: 30 अगस्त, 2026	**स्वीकृत:** 09 सितंबर, 2026	**प्रकाशित:** 30 सितंबर, 2026
सारणी: 00	**चित्र एवं ग्राफ:** 00	**स्रोत एवं संदर्भ:** 11
मुख्य शब्द:	पर्यावरण संरक्षण, भारतीय ज्ञान परम्परा, ज्ञान–विज्ञान, सतत विकास।	

1. परिचय एवं पृष्ठभूमि : पारंपरिक ज्ञान, जिसे स्वदेशी ज्ञान भी कहते हैं। पारंपरिक ज्ञान का मतलब आम तौर पर उन ज्ञान प्रणाली से होता है जो किसी इलाके या समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं में शामिल होते हैं। इसके अंतर्गत तरीके, रिवाज, परंपरा आदि को सम्मिलित किया जा सकता है। पर्यावरण संरक्षण भोजन की उपलब्धता और सतत विकास के लिए पारंपरिक ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण है। ज्ञान परंपरा का अध्ययन, संस्कृति और पर्यावरण के संरक्षण के लिए अति महत्वपूर्ण है। भारत अलग–अलग तरह के ज्ञान, परंपरा और संस्कृति की धरती है, जिससे हम अपने पुराने ज्ञान के समय के बारे में जान सकते हैं। भारतीय पारंपरिक ज्ञान में पर्यावरण सुरक्षा, विज्ञान, अंतरिक्ष, औषधीय पौधों वगैरह के बारे में बहुत सारा ज्ञान है, जिसका इस्तेमाल करके हम एक बार फिर 'विश्व गुरु' बन सकते हैं। भारत के पास समृद्ध ज्ञान और संस्कृति है, इससे भारत के पारंपरिक तरीकों की सही जानकारी मिलेगी और इन्हें विकसित किया जा सकता है और यह पता लगाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है कि ज्ञान की ये शिक्षाएँ भविष्य में उन्हें कैसे जानकारी दे सकती हैं और उनका फायदा उठा सकती हैं। पारंपरिक ज्ञान ज्यादातर स्थानीय समुदायों की पहचान का अहम हिस्सा है। यह किसी समुदाय के सामाजिक और भौतिक माहौल का मुख्य हिस्सा है और इसलिए इसका बचाव सबसे जरूरी है।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं पर्यावरण संरक्षण : पुराने समय के ऋषियों ने हिमालय के इलाकों या भारत के जंगलों में उगने वाले औषधीय पौधों के इस्तेमाल के बारे में बताया है। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं जिनमें औषधीय पौधों और खाने की चीजों के तौर पर इस्तेमाल होने वाली अलग–अलग जड़ी–बूटियों के अलग–अलग इस्तेमाल बताए गए हैं। आयुर्वेद, जो भारत की औषधीय कला है, भारत के लंबे समय से विकसित हो रहे पारंपरिक ज्ञान का एक नतीजा है। वैदिक युग (1500 से 500 ईशा पूर्व) के साहित्य में प्रकृति पूजा को महत्व दिया गया है। वेद की शुरुआत प्रकृति के देवताओं की पूजा से होती है। इसमें पृथ्वी, अग्नि, बृहस्पति, सोम, इंद्र, रुद्र, मरुत, वायु, वरुण आदि की उपासना की गई है। इससे प्रकट होता है कि वैदिक काल के ऋषियों को प्रकृति की उपयोगिता का पूरा ज्ञान था। वैदिक युग के सबसे प्रमुख ग्रंथ चार वेद हैं जिन्हें हम ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा यजुर्वेद के नाम से जानते हैं। वेदों के मंत्रों में प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के स्पष्ट संदेश दिए गए हैं।

वेद का अर्थ ज्ञान होता है वेदों में पर्यावरण से सम्बन्धित अधिकतम ऋचाएँ यजुर्वेद तथा अथर्ववेद में प्राप्त होती हैं। ऋग्वेद में भी पर्यावरण से सम्बन्धित ऋचाएँ उपलब्ध है। वेदों की सबसे बड़ी विशेषता है कि इसमें मनुष्य

और प्रकृति को एक दूसरे से संबद्ध माना गया है। वेदों में जल, हवा, वायु और आकाश जैसे प्राकृतिक तत्वों के बारे में भी बताया गया है। वेदों के अलावा इस युग में लिखे गए अन्य प्रमुख ग्रंथ ब्राह्मण, वेदांग, त्रिपिटक, अर्थशास्त्र, अष्टाध्यायी, महाभाष्य, राजतरंगिणी आदि हैं।

ऋग्वेद में प्रकृति का उल्लेख किया गया है और इसमें पृथ्वी, वायु, जल और आकाश जैसे प्राकृतिक तत्वों का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है है। ऋग्वेद में वृक्षों को अपने परिवार के सदस्यों के रूप में समझा गया है जो हमें ऑक्सीजन प्राण वायु प्रदान करते है। ऋग्वेद में पर्यावरण संरक्षण पर एक श्लोक हैं–

यत्किं च दृश्यते तत्सर्वं जगदेकं देवेश्वरैः।

एतस्माद्विरजं विश्वं परितः पश्यते नरः॥

अर्थात् प्रकृति के समस्त तत्व देवताओं द्वारा निर्मित हुए हैं और सभी मनुष्य इसे देखते हैं।

इसी प्रकार एक अन्य श्लोक है–

यतो विश्वं भुवनानि सज्जन्ते स्वभावेन नित्यमस्ति यत्र।

तत्र सत्यं न विज्ञायते कश्चित् राजा तं देवमभिमन्यते॥

अर्थात् वह स्थान जहां सभी भूत एवं भविष्य के समस्त सृष्टि कार्य होते हैं और जहां सत्य होता है वहां कोई राजा भी उस देवता को अभिमान करता है।इसमें प्रकृति की अनन्तता और उसकी स्वाभाविक गुणों के बारे में बताया गया है।

अथर्ववेद में वृक्षारोपण, जल संचय, आदि के बारे में बताया गया है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त के श्लोक संख्या 12 में धरती को माँ का दर्जा दिया गया है।

"माता भूमिः पुत्रोहम पृथिव्याः"

अर्थात् धरती मेरी माँ हैय मैं उसका बेटा हूँ। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक सामाजिक व्यवस्था विश्व की पहली ऐसी व्यवस्था थी जिसने पर्यावरण संरक्षण पर काम किया वेद में पृथ्वी को माँ मानते हुए सजीव और निर्जीव दोनों प्रकार के पदार्थों के संरक्षण को महत्वपूर्ण बताया।

अथर्ववेद में प्रकृति के संरक्षण पर एक श्लोक हैं–

पृथिवीं दुहितरं कृष्णमध्यमा वसूनां विश्वरूपाणि द्यावापृथिवी देवीरुपस्थे।

उत संगच्छ यथासुखं गातुं यत्र नो अन्यः कस्यचित् प्रभूतोऽवताति॥

अर्थात् पृथ्वी माता है जिसका कृष्ण रंग है। जो वसुओं के बीच मध्य में है, जो देवी हैं, द्यु और पृथ्वी इनके साथ होते हुए। हम सभी वहाँ जाते हैं और जो कुछ होता है, उसमें कोई बदलाव नहीं होता। यहाँ कोई अन्य प्रभुता नहीं है।

अथर्ववेद में वनों को बचाने के उपाय बताए गए है, जल को संरक्षित रखने उपाय बताए गए हैं, जल, वायु, मिट्टी और अन्य प्राकृतिक तत्वों के प्रदूषण से बचने के उपाय बताए गए हैं, वृक्षारोपण करने के उपाय बताए गए है।

वैदिक शांति पाठ मंत्र संपूर्ण सृष्टि, पर्यावरण और आंतरिक मन में शांति के लिए किया जाने वाला एक अत्यंत पवित्र मंत्र है। यह मंत्र आकाश, अंतरिक्ष, पृथ्वी, जल, औषधियों और वनस्पतियों में शांति की कामना करता है–

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः,
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः,
सर्वं शान्तिः, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अर्थात् आकाश में शांति हो, अंतरिक्ष में शांति हो। पृथ्वी पर शांति हो, जल में शांति हो, औषधियों में शांति हो। वनस्पतियों में शांति हो, विश्व के सभी देवताओं में शांति हो, ब्रह्म (परमेश्वर) में शांति हो। सब कुछ शांत हो, शांति ही शांति हो, वह शांति मुझे प्राप्त हो। दैहिक, दैविक और भौतिक–तीनों प्रकार के ताप शांत हों।

मत्स्य पुराण का एक प्रसिद्ध श्लोक है
दश कूप समा वापी, दशवापी समोहद्रः।
दशह्रद समः पुत्रो, दशपुत्रो समो द्रुमः।।

अर्थात् दस कुओं के बराबर एक बावड़ी होती है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है और दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष होता है। उपनिषद का एक प्रसिद्ध मंत्र हैः

सर्वे भवन्तु सुखिनः।
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।
मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥

अर्थात् सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी का जीवन मंगलमय बनें और कोई भी दुःख का भागी न बने। यह मंत्र लोकक्षेम मंत्र अथवा विश्व कल्याण मंत्र के नाम से प्रसिद्ध है।

हिंदू धर्म में, प्रत्येक देवता के पास किसी पशु या पक्षी के रूप में एक वाहन है जैसे भगवान शिव का वाहन नंदी (बैल), भगवान विष्णु का वाहन गरुड़, भगवान गणेश का वाहन मूषक (चूहा), माँ दुर्गा का वाहन सिंह, माँ लक्ष्मी का वाहन उल्लू, और माँ सरस्वती का वाहन हंस हैं। ये वाहन देवताओं की दिव्य शक्तियों के साथ–साथ प्राकृतिक संतुलन का प्रतीक हैं। हिंदू धर्म में कई वृक्षों अथवा पौधों को पूजनीय और पवित्र माना जाता है, जिनमें बरगद, पीपल, बेल, आँवला, आम, अशोक, केला, नीम और तुलसी प्रमुख हैं। इन वृक्षों में देवी–देवताओं का वास माना जाता है, जो सुख–समृद्धि, स्वास्थ्य और कष्टों से मुक्ति प्रदान करते हैं। धार्मिक महत्व होने के कारण लोग इनका सदियों से संरक्षण करते आ रहे हैं।

राकेश कुमार (2010), कैलाश चंद्र भट्ट (2017), राजबीर सिंह (2019), राजीव कुमार श्रीवास्तव (2019), पूनम भूषण (2020), विनीत उपाध्याय (2021), सुनील कुमार गुप्ता (2022), गीतांजली श्रीवास्तव (2023), दयाशंकर सिंह यादव (2023), प्रियंका तथा अर्चना सिंह (2024) तथा कांति शर्मा (2025) जैसे विद्वानों ने अपने शोध में भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रति संरक्षण की अवधारणा को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया है जिससे यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व को पुराने समय से ही पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने में कारगर सिद्ध हुई है।

निष्कर्ष एवं सुझाव : उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति संरक्षण उपभोग के बजाय सम्मान, सह–अस्तित्व और संतुलन (ऋत) पर आधारित है, जहाँ प्रकृति को निर्जीव वस्तु नहीं, बल्कि दिव्य माना गया है। 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' (भूमि माता है, मैं पुत्र हूँ) की भावना के तहत वृक्ष, जल, नदियों और पशुओं की पूजा और संरक्षण को धर्म का अनिवार्य हिस्सा माना गया है। भारतीय दर्शन में प्रकृति के प्रत्येक घटक जैसे पेड़ पौधे, नदियाँ, पर्वत और पशुओं को पूजनीय माना गया है। इससे इसे भारतीय जनमानस में स्वतः ही प्रकृति संरक्षण का भाव विकसित होता है उपनिषद हमें शिक्षा देते हैं कि हम प्रकृति के संसाधनों का उपभोग श्त्यागपूर्वकश करें यानी केवल आवश्यकता अनुसार ही करें। वेदों में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को रोका गया है। मनुस्मृति में पेड़ों को काटना एक निंदनीय कृत्य माना गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा में "अहिंसा परमो धर्मः" मानते हुए प्रत्येक जीव के प्रति दया का भाव रखने की शिक्षा दी गई है। यह दृष्टिकोण पर्यावरण के अनुकूल जीवनशैली के साथ–साथ वर्तमान संकटों पर्यावरण संकटों और समस्याओं का समाधान प्रदान करता है।

स्रोत एवं संदर्भ :

1. कांति शर्मा (2025). पर्यावरण संरक्षण और भारतीय ज्ञान परंपरा. Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrum. खंड–4, अंक–9, पृष्ठ 117–119.
2. कैलाश चंद्र भट्ट (2017). वेदों में पर्यावरण संरक्षण. International Journal of Sanskrit Research. खंड–3 अंक–1, पृष्ठ 28–30.
3. गीतांजली श्रीवास्तव (2023). प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण के मूल्य. अधिगम. खंड–28, पृष्ठ 75–87.
4. दयाशंकर सिंह यादव (2023). भारतीय वेद और पर्यावरण संरक्षण. अपनी माटी. अंक–47, पृष्ठ 175–179.
5. पूनम भूषण (2020). भारतीय ज्ञान दृष्टि और पर्यावरण. लोक आविष्कार. International & Journal. खंड–9, अंक–1, पृष्ठ 10–14.
6. प्रियंका तथा अर्चना सिंह (2024). प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति पूजा. International Journal of Innovative Research and Creative Technology. खंड–10, अंक 1, पृष्ठ 1–7.
7. राकेश कुमार (2010). प्राचीन भारत में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा. शोध संचयन. खंड–1, अंक–1, पृष्ठ, 1–5.
8. राजबीर सिंह (2019). वेदों में पर्यावरण चेतना. राजभाषा ज्योति. प्रकाशक राजभाषा विभाग. पृष्ठ 6–11.
9. राजीव कुमार श्रीवास्तव (2019). पर्यावरण संरक्षण की भारतीय परंपराएं आर्यावर्त शोध विकास पत्रिका. खंड–10(1), अंक–11, पृष्ठ संख्या, 76–78.
10. विनीत उपाध्याय (2021). Indian Knowledge Tradition and Environment- International Journal of Law Management & Humanities. खंड–4, अंक–5, पृष्ठ 106–117.
11. सुनील कुमार गुप्ता (2022). प्राचीन भारतीय चिंतन में पर्यावरण संरक्षण एक भौगोलिक अध्ययन. IOSR Journal of Humanities and Social Science. खंड–27, अंक–5, पृष्ठ 75–80.

=====

आलेख उद्धरित करें :	खरे, डॉ. रीतेश कुमार (2026)। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित पर्यावरण संरक्षण की अवधारणाएं। बुंदेलखंड जर्नल ऑफ अकादमिक रिसर्च (बीजेएआर), वॉल्यूम–2, अंक–3, जुलाई–सितंबर, 2026, पृष्ठ 88–90। https://doi.org/10.5281/zenodo.23016701